

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 7a, इब्रानियों 7:1-8:13: बेहतर पौरोहित्य, बेहतर वाचा (भाग 1)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इब्रानियों 7:1 से 10:18 यीशु की पुरोहिती मध्यस्थता के बारे में लंबी और कठिन बहस प्रस्तुत करता है, जो उन विषयों पर गहराई से चर्चा करता है जिन्हें लेखक ने पहले ही अध्याय 2, पद 17 और 18 में और फिर अध्याय 4, पद 16 से 5, पद 10 में उठाया है। इस लंबे केंद्रीय भाग में, लेखक कई प्रमुख प्रश्नों से निपटेगा, जिन्हें हमें अपने सामने रखना चाहिए क्योंकि हम उसके तर्क के विवरण के माध्यम से काम करते हैं। पहला सवाल यह है कि मलिकिसिदक की वंशावली में एक उच्च पुजारी होने का क्या महत्व है? और यीशु को इस पुरोहिती वंशावली में नामित होने के लिए क्या योग्यता है? दूसरा सवाल यह है कि पुराने नियम और उस वाचा को बनाए रखने वाले पुरोहिती के लिए क्या परिणाम हैं कि अब मलिकिसिदक की वंशावली में याजक का आगमन हुआ है और हारून की वंशावली में नहीं? तीसरा और बड़ा सवाल यह है कि यीशु की मृत्यु और स्वर्गारोहण का क्या महत्व है अगर हम इन घटनाओं को मलिकिसिदक की वंशावली में पुजारी के कार्य के रूप में समझते हैं? और अंत में, उन लोगों के लिए क्या परिणाम होंगे जो लेवीय याजकों की वंशावली की मध्यस्थता के बजाय यीशु की मध्यस्थता के माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं? अध्याय 7 और 8 मुख्य रूप से इनमें से पहले दो प्रश्नों को संबोधित करते हैं, जो इस बात से शुरू होते हैं कि मलिकिसिदक की वंशावली में महायाजक होने का क्या महत्व है? और यीशु को इस वंशावली में नामित होने के लिए क्या योग्यता है? इब्रानियों 7, आयत 1 से 10, उत्पत्ति 14 से ज्ञात मलिकिसिदक की कहानी पर वापस जाते हैं, जो परिचय देते हैं कि वह कौन है और उत्पत्ति से मलिकिसिदक की कहानी हमें मलिकिसिदक की वंशावली में इस नए याजक के बारे में क्या बता सकती है।

लेखक विशेष रूप से यह प्रदर्शित करने में रुचि रखता है कि यह हारून के पुजारी वंश की तुलना में अधिक प्रतिष्ठित पुजारी वंश है। वह हारून के पुजारी वंश की सकारात्मक प्रतिष्ठा पर निर्माण कर रहा है, जिसने कम से कम यहूदी और यहूदी-ईसाई संस्कृति के भीतर, वास्तव में प्राचीन दुनिया में सबसे ऊंचा, सबसे सम्मानजनक पद धारण किया था। किसी व्यक्ति की प्रशंसा करने के लिए प्राचीन बयानबाजी में इस्तेमाल की जाने वाली आम रणनीतियों में से एक उसके पूर्वजों की गरिमा पर ध्यान केंद्रित करना था, और यह कुछ ऐसा है जिसे हम यहाँ काम करते हुए पाते हैं, क्योंकि इब्रानियों के लेखक लेवी की गरिमा के बारे में मलिकिसिदक की गरिमा के बारे में सोचते हैं।

यह दो पंक्तियों की गरिमा और इन दो पुरोहिती पूर्ववर्तियों से प्राप्त दो पंक्तियों की सापेक्ष गरिमा को प्रतिबिंबित करेगा। किसी व्यक्ति की प्रशंसा करने की एक और रणनीति उस व्यक्ति की तुलना समान मूल्य वाले व्यक्तियों से करना था। लेखक भी उस रणनीति का पालन करना जारी रखता है, क्योंकि वह पहले ही बेटे की तुलना स्वर्गदूतों से और बेटे की तुलना मूसा से कर चुका है।

अब वह बेटे के सम्मान और उससे जुड़े रहने के मूल्य पर जोर देते हुए उसके सम्मान पर जोर देता है, जो लेवी के उच्च पुजारियों के सम्मान से कहीं अधिक है। अध्याय 7, श्लोक 11 से 28 में, लेखक उन लाभों की खोज करता है जो लेवी के वंश के पुजारियों द्वारा दिए जाने वाले लाभों से कहीं अधिक यीशु के माध्यम से परमेश्वर के निकट आने वालों को मिलते हैं। लेकिन वह इस गैर-लेवी पुरोहिती पद पर यीशु की नियुक्ति के टोरा, यानी कानून के लिए परिणामों की भी खोज करता है।

अध्याय 8 के आरम्भ में, लेखक एक सारांश कथन देता है जो उन विषयों का भी परिचय देता है जो अध्याय 9 और 10 में प्रमुखता से शामिल होंगे। इनमें वह बेहतर स्थान शामिल है जहाँ यीशु अपना याजकीय कार्य निष्पादित करता है, स्वर्ग स्वयं, स्वर्गीय पवित्र स्थान और साथ ही यीशु द्वारा अर्पित बलिदान की श्रेष्ठ प्रकृति, अर्थात् संसार के जीवन के लिए उसका अपना जीवन।

अध्याय 8 के दूसरे भाग में, अर्थात् श्लोक 7 से 13 में, लेखक पवित्र शास्त्रों से परमेश्वर की एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी पढ़ता है। उसे यिर्मयाह अध्याय 31, श्लोक 31 से 34 में वह दिव्य भविष्यवाणी मिलती है जो उसके इस दावे के लिए सबूत प्रदान करती है कि यीशु अब बेहतर वादों पर आधारित एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ है। यह भविष्यवाणी उस दूसरे प्रश्न का निर्णायक उत्तर भी प्रदान करती है जिसे लेखक इस लंबे और कठिन वचन में उठाता है।

पुराने नियम और उस नियम को बनाए रखने वाले याजक वर्ग के लिए क्या परिणाम हैं, जो मेल्कीसेदेक की वंशावली में याजक के आगमन के बारे में है? भजन 110 ने यीशु, पुत्र के व्यक्तित्व और कार्य के लेखक के विवरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भजन 110 पद 1, बेशक, परिचित पाठ है: मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ। हालाँकि, भजन 110 पद 4, लेखक को यीशु के व्यक्तित्व के रहस्य में और आगे ले जाता है और इस पंक्ति के साथ काम करता है, तुम मेल्कीसेदेक की वंशावली में हमेशा के लिए एक याजक हो।

यह मेल्कीसेदेक के इस चरित्र के बारे में लेखक की ओर से आगे की खोज को आमंत्रित करता है। लेखक उत्पत्ति 14, श्लोक 14 से 20 की ओर मुड़ता है, जो यहूदी धर्मग्रंथों में एकमात्र अन्य स्थान है जहाँ यह छायादार चरित्र दिखाई देता है। वहाँ, हम पढ़ते हैं।

कदोर्लाओमा और उसके साथ के राजाओं को हराने के बाद, सदोम का राजा अब्राहम से मिलने शावे की घाटी में गया। यह राजा की घाटी है। और शालेम का राजा मलिकिसिदक रोटी और दाखमधु लेकर आया।

वह परमप्रधान परमेश्वर का पुजारी था। उसने अब्राहम को आशीर्वाद दिया और कहा, और अब्राहम ने उसे सब कुछ का दसवां हिस्सा दिया। इस कहानी की पृष्ठभूमि हमें लेखक द्वारा इस आकृति और इस प्रकरण के उपयोग की जांच करने के लिए तैयार करती है।

जैसा कि हम इब्रानियों 7, आयत 1 से 3 में पढ़ते हैं। पहले का अनुवाद धार्मिकता के राजा के रूप में किया गया है। और फिर शालेम के राजा, जो शांति के राजा हैं। पिता के बिना, माता के बिना,

वंशावली के बिना, न तो दिनों की शुरुआत और न ही जीवन का अंत, परमेश्वर के पुत्र के समान होने के कारण, वह हमेशा के लिए एक पुजारी बना रहता है।

जैसे-जैसे लेखक मेल्कीसेदेक और उसकी कहानियों के अर्थ पर विस्तार करता है, वह विशेष रूप से मेल्कीसेदेक और यीशु के बीच मसीहा के रूप में समानता के बिंदुओं की तलाश करता है। वह खुद 7, पद 3 में अप्रत्यक्ष रूप से इसका संकेत देता है, जहाँ वह कहता है कि मेल्कीसेदेक को परमेश्वर के पुत्र के समान बनाया गया था। तो, इनमें से कुछ समानता के बिंदु क्या हैं जो लेखक को मेल्कीसेदेक और मसीहा के बीच घनिष्ठ संबंध का सुझाव देते हैं? लेखक मेल्कीसेदेक के नाम और मेल्कीसेदेक की उपाधि की परिभाषाएँ प्रस्तुत करता है क्योंकि ये स्वयं मसीहाई संकेत हैं।

मेल्कीसेदेक को एक ऐसे नाम के रूप में व्याख्यायित किया जाता है जिसका अर्थ है धार्मिकता का राजा। और उसकी उपाधि, शालेम का राजा, शांति का राजा के रूप में व्याख्यायित की जाती है। हम इस व्यक्ति के बारे में फिलो के उपचार में मेल्कीसेदेक और उसकी उपाधि के समान अनुवाद पाते हैं।

धार्मिकता और शांति दोनों ही परमेश्वर के मसीहा और मसीहाई राज्य की विशेषताएँ हैं। हम यशायाह 9, आयत 6-7 को देख सकते हैं, जो हिब्रू भविष्यवक्ताओं में एक प्रसिद्ध उदाहरण है। क्योंकि हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है, एक बेटा हमें दिया गया है।

अधिकार उसके कंधों पर टिका है, और उसका नाम अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता, शांति का राजकुमार है। उसका अधिकार निरंतर बढ़ता रहेगा, और दाऊद के सिंहासन और उसके राज्य के लिए अनंत शांति होगी। वह इसे न्याय और धार्मिकता के साथ इस समय से लेकर हमेशा के लिए स्थापित और बनाए रखेगा।

दाऊद के राजतंत्र की बहाली के बारे में यह भविष्यवाणी विशेष रूप से शांति और धार्मिकता या न्याय दोनों को उजागर करती है, जो मसीहाई युग की पहचान के रूप में समानार्थी हैं। यशायाह में आगे, हम फिर से पढ़ते हैं, तब न्याय जंगल में वास करेगा, और धार्मिकता फलदायी खेत में निवास करेगी। धार्मिकता का प्रभाव शांति होगा और धार्मिकता, शांति और विश्वास का परिणाम हमेशा के लिए होगा।

हिब्रू भविष्यवक्ताओं के ग्रंथों और बाद में द्वितीय मंदिर काल के यहूदी ग्रंथों से उदाहरणों को बढ़ाया जा सकता है। न केवल मेल्कीसेदेक का नाम और उपाधि मसीहा की ओर इशारा करती है, बल्कि वह कुछ अन्य तरीकों से परमेश्वर के पुत्र से भी मिलता जुलता है। लेखक मेल्कीसेदेक का वर्णन इस प्रकार करता है कि उसका कोई पिता नहीं, कोई माता नहीं, कोई वंशावली नहीं, और न ही उसके दिनों की शुरुआत है और न ही जीवन का अंत।

यहाँ काम करने वाला सिद्धांत, जैसा कि लेखक उत्पत्ति की कहानी के इन निहितार्थों को बता रहा है, यह है कि पवित्रशास्त्र की खामोशियाँ भी वाक्पटु हैं। उत्पत्ति 14 में मेल्कीसेदेक की वंशावली के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। हमें उसके पिता या उसकी माँ या वह किस जनजाति से आता है, के बारे में नहीं बताया गया है।

हमें न तो उसके जन्म के बारे में बताया गया है और न ही उसकी मृत्यु के बारे में। लेखक इन चुप्पी को महत्वपूर्ण मानता है, मानो उत्पत्ति का लेखक मल्कीसेदेक को आने वाले व्यक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना चाहता था, परमेश्वर का पुत्र जो वास्तव में बिना किसी शुरुआत या जीवन के अंत के बिना है। यहाँ शब्द, बिना वंशावली, बिना वंशावली, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

मेल्कीसेदेक की वंशावली के बाद यह पुजारी पद जैविक वंश के अलावा किसी और चीज़ पर स्थापित किया गया है, जो लेवी के पुजारी पद के लिए योग्यता के केंद्र में था। यह शायद बेबीलोन के निर्वासन की अवधि के दौरान और उसके बाद वंशावली के सावधानीपूर्वक संरक्षण से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जैसा कि एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों में देखा गया है। यदि कोई लेवी के गोत्र के भीतर एक पुजारी कबीले के भीतर अपनी वंशावली को सत्यापित नहीं कर सकता था, तो उसे मंदिर की सेवा से बाहर रखा जाता था जब तक कि इस तरह के दावे को सत्यापित नहीं किया जा सकता था।

वंशावली ही सबकुछ थी। यह कुछ और क्या है जो मेल्कीसेदेक के आदेश के बाद पुजारी का आधार है? लेखक मेल्कीसेदेक की शेष विशेषताओं से उत्तर का अनुमान लगाता है, जिसकी वह यहाँ पहचान करता है, न तो दिनों की शुरुआत और न ही जीवन का अंत। मेल्कीसेदेक की पुजारी रेखा का परिभाषित चिह्न पूर्व-अस्तित्व और अनंत काल तक अस्तित्व बन जाता है।

यह पहले से ही कुछ ऐसा है जिसे लेखक ने पुत्र के लिए स्थापित किया है। इब्रानियों 1:1-4 में, उन्होंने सृष्टि से पहले सृष्टि में परमेश्वर के साथ भागीदार के रूप में पुत्र के अस्तित्व की बात की है। इब्रानियों 1:10-12 में, उन्होंने पहले से ही एक आधिकारिक धर्मशास्त्रीय पाठ के आधार पर अनुमान लगाया है कि पुत्र भौतिक सृष्टि के विघटन और आने वाले युग की शुरुआत के बहुत बाद तक अस्तित्व में रहेगा।

उपदेशक इसके तर्कपूर्ण फल का फायदा बाद में अध्याय 7 में उठाएगा, खास तौर पर 7 पद 16 में, जहाँ वह यीशु को एक शारीरिक अध्यादेश की आज्ञा के आधार पर नहीं बल्कि एक अविनाशी जीवन के आधार पर एक पुजारी के रूप में पहचानता है। इसके अलावा, अध्याय 7, पद 23-25 में, उपदेशक दावा करेगा कि मेल्कीसेदेक के क्रम के बाद इस पुजारी का अंतहीन जीवन उन लोगों के लिए लाभ का बिंदु है जो उसके माध्यम से भगवान के पास आते हैं, न कि उन कई पुजारियों के माध्यम से जो पुजारी के पद पर बने नहीं रह सकते क्योंकि मृत्यु बीच में आती रहती है। लेकिन मेल्कीसेदेक की वंशावली के बाद पुजारी हमेशा जीवित रहता है और इस प्रकार हमेशा उन लोगों के लिए मध्यस्थता करने में सक्षम होता है जो उसके माध्यम से भगवान के पास आते हैं।

जैसा कि मैंने पहले बताया, किसी व्यक्ति की प्रशंसा करने की एक प्राचीन रणनीति उसके पूर्वजों की तुलना अन्य महान व्यक्तियों से करना और यह दिखाना था कि उसके पूर्वज वास्तव में उनसे भी महान हैं। यह वही है जो अब इब्रानियों के लेखक अध्याय 7, श्लोक 4-10 में करते हैं, जब वह मेल्कीसेदेक को लेवी से ऊपर रखने के लिए एक तर्क विकसित करते हैं। इसका तात्पर्य यह है

कि मेल्कीसेदेक की वंशावली में पुजारी को लेवी की वंशावली में किसी भी पुजारी की तुलना में अधिक सम्मान प्राप्त होगा।

देखें कि यह कितना महान था, लेखक पद 4 के आरंभ में लिखता है। यहाँ, लेखक अगले पैराग्राफ के लिए अपनी थीसिस की घोषणा करता है। मेल्कीसेदेक वह व्यक्ति था जिसे अब्राहम ने कदोरलाओमर और अन्य राजाओं के विरुद्ध युद्ध में लूटे गए माल का दसवाँ हिस्सा दिया था, जिन्होंने अब्राहम, सदोम के राजा और उनके सहयोगियों के विरुद्ध गठबंधन किया था। अब इब्रानियों के लेखक ने इस कार्य की व्याख्या दशमांश के रूप में की है, अर्थात्, अपने पुरोहित मध्यस्थ को वह देना जो उसका हक है।

इसलिए, अब्राहम द्वारा मलिकिसिदक को दसवाँ हिस्सा देना सिर्फ पड़ोसी राजा के प्रति एक उदार कार्य नहीं था, बल्कि यह अपने पुजारी को वह देने का कार्य था जो उस पुजारी की उच्च स्थिति और ईश्वर के साथ अब्राहम की ओर से मध्यस्थ के रूप में कार्य करने के कारण उसे देना था। यह लेखक को लेवी के पुत्रों के साथ तुलना करने के लिए प्रेरित करता है। जैसा कि वह लिखता है, जो लेवी के पुत्र हैं, याजकवर्ग, उन्हें व्यवस्था के अनुसार लोगों को दसवाँ हिस्सा देने की आज्ञा मिलती है, अर्थात्, उनके अपने भाई, भले ही वे भी अब्राहम की कमर से आए हों।

लेखक यहाँ पंचग्रन्थ में दिए गए कई आदेशों में से किसी एक का उल्लेख करता है, उदाहरण के लिए, संख्या 18:21। लेवियों को, मैंने इस्राएल में हर एक दशमांश को उनके द्वारा की गई सेवा के बदले में, अर्थात् मिलापवाले तम्बू में की गई सेवा के लिए दिया है। यह वंशावली ही है जो लेवियों को अन्य इस्राएलियों से अलग करती है और जो लेवियों को उन लोगों से दशमांश प्राप्त करने के योग्य बनाती है जो उनके जैसे अब्राहम की कमर से आते हैं।

लेकिन यहाँ, उपदेशक आगे कहते हैं, उनसे वंशावली के बिना एक व्यक्ति ने अब्राहम को दशमांश दिया और उस व्यक्ति को आशीर्वाद दिया जिसके पास वादे थे। उत्पत्ति 14 में, तोराह के तहत व्यवस्थाओं के विपरीत, कोई स्पष्ट वंशावली योग्यता नहीं रखने वाला पुजारी अब्राहम से दशमांश प्राप्त करता है। मुद्दा यह प्रतीत होता है कि लेवियों ने एक विशेष वंशावली योग्यता रखने के आधार पर समान लोगों से दशमांश लिया, जबकि मलिकिसिदक ने एक निम्न से दशमांश लिया, न केवल वंशावली योग्यता के बिना, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से, बिना किसी वंशावली के।

मलिकिसिदक वह है जो एक शाश्वत अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे इस तरह प्रस्तुत किया जाता है मानो दिनों की शुरुआत या जीवन का अंत न हो। और यहाँ, वह एक मात्र नश्वर प्राणी से दशमांश प्राप्त करता है। तो मलिकिसिदक की श्रेष्ठता के पक्ष में दो तर्क हैं।

लेखक सुझाव देता है कि, बिना किसी विरोधाभास के, निम्न पक्ष को उच्च पक्ष द्वारा आशीर्वाद दिया जाता है, कहानी के उस हिस्से का जिक्र करते हुए जहाँ मेल्कीसेदेक अब्राहम को आशीर्वाद देता है। लेखक, निश्चित रूप से, यह मान रहा है कि श्रोता मानसिक रूप से कई उदाहरणों को जोड़ देंगे जहाँ निम्न पक्ष वरिष्ठों को आशीर्वाद देते हैं या वरिष्ठों पर आशीर्वाद मांगते हैं। उदाहरण

के लिए, सेवक अपने राजा को आशीर्वाद देते हैं या आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं, या उपासक भगवान को आशीर्वाद देते हैं।

फिर भी, मानवीय अनुभव में, अक्सर ऐसा होता है कि अधिक विशेषाधिकार वाला व्यक्ति ही कम विशेषाधिकार वाले व्यक्ति को आशीर्वाद देने की शक्ति रखता है। उदाहरण के लिए, माता-पिता द्वारा बच्चों को आशीर्वाद देने की बहुत ही सामान्य स्थिति में। और यह जीवन का वह हिस्सा है जिसका लेखक, जैसा कि वह कहता है, बिना किसी विरोधाभास के आह्वान करता है।

इसके अलावा, वह मेल्कीसेदेक की अमरता और लेवी के पुजारियों की नश्वरता के बीच अंतर भी बताता है। यहाँ, नश्वर लोग, यानी यहाँ टोरा के तहत व्यवस्थाओं में, नश्वर लोगों को दशमांश प्राप्त हुआ, लेकिन वहाँ यह गवाही दी गई है कि वह जीवित है। इस उदाहरण में, अमर केवल नश्वर से बेहतर है।

फिर लेखक आगे कहता है कि इस मामले में, नश्वर मनुष्य दशमांश प्राप्त करते हैं, लेकिन उस मामले में, गवाही दी जाती है कि वह जीवित है। और इसलिए, लेवी, जिसने दशमांश प्राप्त किया, ने अब्राहम के माध्यम से दशमांश का भुगतान किया, क्योंकि लेवी अभी भी अपने पूर्वज की कमर में था जब मलिकिसिदक उससे मिला था।

इस वाक्यांश के साथ, जैसा कि कहा जाता है, उपदेशक स्वीकार करता है कि वह यहाँ रूपकात्मक अभिमान में लिप्त है। फिर भी, उसका दावा पहचान और व्यक्तित्व की सामूहिक धारणा को अच्छी तरह से दर्शाता है जो प्राचीन व्यक्ति की मानसिकता का हिस्सा रहा होगा। उत्पत्ति 14 की घटनाओं के समय अब्राहम के सभी वंशज अभी भी किसी न किसी रूप में अब्राहम में हैं।

इसलिए, मेल्कीसेदेक के प्रति अब्राहम के कार्य का लेवी और लेवी से आने वाले पुजारियों पर प्रभाव पड़ता है। उनका अपना पुजारीत्व गौण है और अंततः मेल्कीसेदेक पर निर्भर है, जिसके पुजारीत्व और मध्यस्थता को अब्राहम ने स्वीकार किया जब उसने मेल्कीसेदेक को दशमांश भेंट किया। लेखक यह कैसे दावा कर सकता है कि मूसा की वाचा, साथ ही लेवी के पुजारीत्व को जो सदियों से अधिकृत और विनियमित किया गया था, अब एक नए महायाजक, यीशु और एक नई वाचा के पक्ष में अलग रखा जा रहा था? लेखक अपने श्रोताओं को यीशु की ओर से किए जा रहे दावों के लिए शास्त्रों से प्रमाण देने के लिए कष्ट में है।

अध्याय 7, श्लोक 11 से 19 में, पूर्णता का विषय फिर से काफी महत्वपूर्ण रूप में उभरता है। लेखक ने इसे इस खंड के आरंभ और अंत में रखकर इसे उजागर किया है, जिसे समावेशन कहा जाता है। आरंभिक श्लोक एक अलंकारिक प्रश्न है।

इसलिए, यदि पूर्णता लेवीय याजकत्व के माध्यम से होती, क्योंकि लोगों को इस याजकत्व के आधार पर व्यवस्था दी गई थी, तो मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार याजक नियुक्त किए जाने और हारून के क्रम के अनुसार याजक नियुक्त किए जाने की क्या आवश्यकता थी? और फिर खंड 7:19 के अंत में, हम पढ़ते हैं कि व्यवस्था ने कुछ भी पूर्ण नहीं किया। इसलिए, हमारे पास

पूर्णता के विचार के इर्द-गिर्द यह समावेश है। इसलिए, हमें यह पूछने की ज़रूरत है कि इस अंश में और अध्याय 7 से 10 के केंद्रीय प्रवचन में लेखक के लिए पूर्णता का क्या अर्थ है? एक बात जो हम कह सकते हैं वह यह है कि पूर्णता का अर्थ है पाप की अशुद्धता से विवेक की सफाई ताकि मनुष्य परमेश्वर की पवित्रता से सुरक्षित दूरी पर रहने के बजाय परमेश्वर के आमने-सामने आ सके।

विवेक की यह शुद्धि ठीक वही है जो लेवीय याजक नहीं कर पाए, इब्रानियों 9 आयत 1 से 10 के अनुसार, वे भेंट और बलिदान चढ़ाकर जो उपासक के विवेक को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हैं। यह 7:11 में अलग-अलग शब्दों में परिलक्षित होता है। यह पूर्णता लोगों को लेवीय याजकत्व के माध्यम से नहीं मिली। लेवीय याजक उपासकों के विवेक को शुद्ध करने और उन्हें ऐसी स्थिति में लाने में सक्षम नहीं थे जिसमें वे परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े हो सकें, अपने पापों और परमेश्वर के विरुद्ध अपने अपमान से शुद्ध हो सकें।

पूर्णता का अर्थ परम शाश्वत क्षेत्र में प्रवेश भी है। जैसे टोरा और उसका पुजारी वर्ग उपासक पर इतना काम नहीं कर सकता कि वह उसे मंदिर में ईश्वर की उपस्थिति में ले जा सके, ईश्वर के क्षेत्र का सांसारिक मॉडल, कानून और उसका पुजारी वर्ग मनुष्य को ईश्वर की वास्तविक उपस्थिति में, स्वर्गीय मंदिर में, अडिग स्वर्गीय क्षेत्र में ले जाने में असमर्थ है, जहाँ यीशु ने हमारे लिए अग्रदूत के रूप में प्रवेश किया था। जब हम अध्याय 7 पद 11 पर आते हैं, तो हम कालक्रम से एक अंतर्निहित तर्क में प्रवेश करते हैं।

भजन 110 की आयत 4 में, राजा दाऊद ने मेल्कीसेदेक की वंशावली में एक महायाजक की नियुक्ति के बारे में एक दिव्य भविष्यवाणी की है, और वह लेवी की पुजारी वंशावली की स्थापना के कई सौ साल बाद ऐसा करता है। लेखक इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि लेवी की पुजारी वंशावली परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के अच्छे उद्देश्यों को प्राप्त करने वाली नहीं थी। भजन 110 में पुजारियों की एक नई पंक्ति की घोषणा, जो कि अधिक हालिया पाठ है, यह दर्शाती है कि टोरा में स्थापित पुजारियों की पुरानी मौजूदा पंक्ति उपासकों को पूर्ण करने के लिए परमेश्वर के कार्य को पूरा करने में विफल रही है।

यहाँ लेवी के पुरोहित वर्ग और मोजेक कानून या सिनाई वाचा के बीच आपसी संबंध को भी समझा जाता है क्योंकि लोगों को लेवी के पुरोहित वर्ग के अस्तित्व के आधार पर टोरा, कानून के नियम दिए गए थे। लेवी के पुजारी और उनके अनुष्ठान सिनाई वाचा के कामकाज, रखरखाव और मरम्मत के लिए आवश्यक थे। जब लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, तो लेवी के पुरोहितों के काम ने रिश्ते को सुधारा।

जब लोग धन्यवाद के प्रसाद चढ़ाना चाहते थे या अन्यथा अपने ईश्वरीय उपकारकर्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते थे, तो लेवी के पुजारी ऐसे संदेशों और बलिदानों के मध्यस्थ थे। इसके अलावा, वाचा या कानून पुजारीत्व के लिए आधारभूत था। जैसा कि लेखक अध्याय 7 के अंत में कहेगा, कानून अपने पुजारी के रूप में उन पुरुषों को नियुक्त करता है जो कमज़ोर होते हैं।

तो, टोरा और लेवी पुरोहिताई, दोनों ही एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। फिर लेखक ने श्लोक 12 में इसका निहितार्थ स्पष्ट किया है। पुरोहिताई में परिवर्तन के साथ, अनिवार्य रूप से कानून में भी परिवर्तन होता है।

इसका निर्णायक प्रमाण यिर्मयाह 31, श्लोक 31 से 34 में मिलेगा, जिसे लेखक इब्रानियों अध्याय 8 के समापन पर अपने प्रमाण के रूप में सुनाएगा। अभी के लिए, वह कानून में बदलाव के अपने आग्रह के समर्थन में अन्य सबूत पेश करता है, अर्थात् मल्कीसेदेक की वंशावली में इस पुजारी पद पर यीशु की नियुक्ति। क्योंकि जिसके बारे में ये बातें कही गई हैं वह एक अलग जनजाति का था, जिसमें से किसी को भी वेदी की देखभाल करने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था। क्योंकि यह स्पष्ट है कि हमारा प्रभु यहूदा से आया था, जिसके जनजाति के संबंध में मूसा ने पुजारियों के बारे में कुछ नहीं कहा।

लेखक जानता है और मानता है कि उसके श्रोता जानते होंगे या आसानी से स्वीकार करेंगे कि यीशु का जन्म यहूदा की वंशावली में हुआ था, जिसके बारे में मूसा ने पुजारियों के बारे में कोई शब्द नहीं दिया। मेल्कीसेदेक की वंशावली में पुजारी के इस नए आदेश की स्थापना, और इस प्रकार पुजारी और कानून का निर्णायक बदलाव जो पुजारी को नियंत्रित करता है और लेवी के पुजारी द्वारा बनाए रखा जाता है, यीशु के पुनरुत्थान के तथ्य से और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। यह एक अविनाशी जीवन की शक्ति का प्रमाण है जिसे मेल्कीसेदेक ने खुद अपने रहस्यमयी रूप से प्रकट होने और इतिहास के मंच से गायब होने के साथ दिनों की शुरुआत या जीवन के अंत के बिना पूर्वाभास किया था।

इस प्रकार पुनरुत्थान में विश्वास इस विश्वास के लिए एक प्रमुख आधार बन जाता है कि यीशु को इस पुजारी आदेश के लिए नियुक्त किया गया था क्योंकि यह गवाही देता है कि आप मेल्कीसेदेक के आदेश के अनुसार हमेशा के लिए एक पुजारी हैं। यहाँ हमेशा के लिए एक पुजारी वाक्यांश, हमेशा इतनी असाधारण चीज़ को संदर्भित करने के लिए नहीं लिया गया था। 1 मैकाबीज़, अध्याय 14, श्लोक 41 के लेखक, उसी भाषा का उपयोग करते हुए, हसमोनियन राजवंश के संस्थापक साइमन की हमेशा के लिए नेता और उच्च पुजारी के रूप में नियुक्ति का उल्लेख करते हैं।

इसके बाद स्पष्ट रूप से शब्द आता है जब तक। हालाँकि, यीशु के मामले में, इस वाक्यांश का अधिक शाब्दिक अनुप्रयोग संभव हो गया है। जैसा कि उपदेशक आगे कहते हैं, और यह और भी अधिक स्पष्ट है क्योंकि एक और पुजारी मेल्कीसेदेक की समानता में उठ खड़ा हुआ है, जो कानून के अनुसार नहीं, एक शारीरिक आज्ञा के अनुसार, बल्कि एक अविनाशी जीवन की शक्ति के अनुसार ऐसा बन गया है।

क्योंकि उसने यह प्रमाण दिया है कि तुम मलिकिसिदक की वंशावली में सदा के लिए याजक हो। यह तथ्य कि यीशु अब मृत्यु की शक्ति से परे जीवित है, यीशु और मलिकिसिदक के बीच पारिवारिक समानता स्थापित करता है। कहा जाता है कि यीशु किसी व्यवस्था या शारीरिक अध्यादेश के आधार पर नहीं, बल्कि अविनाशी जीवन के आधार पर याजक बने।

इस प्रकार लेखक लेवी के पुजारी की योग्यता के मूल्य को सापेक्ष बना रहा है। यह केवल शारीरिक वंश और वंशावली से जुड़ी एक शारीरिक योग्यता पर आधारित है, लेकिन यीशु का पुजारीत्व गुणात्मक रूप से अलग और बेहतर प्रकार के अस्तित्व, एक शाश्वत प्रकार के अस्तित्व पर आधारित है। इस अंश के अंतिम छंदों में हम पढ़ते हैं, इसकी कमजोरी और इसकी बेकारता के कारण पहले दी गई आशा को अलग रखा गया है, क्योंकि कानून ने कुछ भी सिद्ध नहीं किया, और एक बेहतर आशा का परिचय दिया, जिसके माध्यम से हम ईश्वर के करीब आ रहे हैं।

इस प्रकार लेखक अपने मुख्य बिंदुओं को दोहराता है। मेल्कीसेदेक की वंशावली में एक पुजारी की नियुक्ति लेवी के पुजारी पद की अप्रभावीता और लोगों को उनके लिए परमेश्वर के वांछित लक्ष्य तक लाने के लिए मध्यस्थता की गई वाचा को प्रदर्शित करती है, जिसे यहाँ उस भारी शब्द, पूर्णता में संक्षेपित किया गया है। दूसरी ओर, पुजारी पद के इस वैकल्पिक और महान क्रम में इस नए पुजारी की नियुक्ति एक बेहतर आशा का परिचय देती है कि यह लक्ष्य वास्तव में अब साकार होगा।

इब्रानियों 7, आयत 20 से 28 में, इब्रानियों के लेखक ने इस प्रश्न को आगे बढ़ाया है कि नई वाचा को परमेश्वर और मनुष्यों के बीच पिछले वाचा की तुलना में बेहतर और अधिक विश्वसनीय बंधन क्या बनाता है। किसी अनुबंध या वाचा की विश्वसनीयता ऐसे अनुबंध के गारंटर की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। लेखक दो विचार सामने लाता है जो यीशु को एक बेहतर वाचा के गारंटर के रूप में स्थापित करते हैं, जैसा कि वह अध्याय 7, आयत 22 में बताता है।

पहला सबूत ईश्वर की शपथ है, जैसा कि वह कहता है, और ठीक उसी तरह, यह शपथ के बिना नहीं था, जबकि शपथ के बिना पुजारी बन गए थे, शपथ वाला व्यक्ति उससे बात करने वाले के माध्यम से पुजारी बन गया, प्रभु ने शपथ ली है और पश्चाताप नहीं करेगा। आप हमेशा के लिए पुजारी हैं। इस आदेश के द्वारा, यीशु एक बेहतर वाचा का गारंटर बन गया है।

लेखक अंत में यहाँ भजन 110, श्लोक 4 का वह अंश पढ़ता है, जो स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि यह वह शपथ है जो परमेश्वर ने वादे के उत्तराधिकारियों को दी थी ताकि, जैसा कि उसने 618 में पहले कहा था, हम जो हमारे सामने रखी गई आशा को पकड़ने के लिए दौड़े हैं, उन्हें मजबूत प्रोत्साहन मिल सके। यह ईश्वरीय भविष्यवाणी है जो परमेश्वर की इच्छा की अपरिवर्तनीयता को दर्शाती है और इस प्रकार, इस नए पुजारी की मध्यस्थता के माध्यम से बनाई गई नई वाचा की अंतिम विश्वसनीयता को दर्शाती है। इस बेहतर वाचा की दूसरी गारंटी यीशु का अपने अविनाशी जीवन में प्रवेश करना है।

जैसा कि लेखक आगे कहते हैं, एक ओर, बहुत से लोग पुजारी बन गए हैं क्योंकि मृत्यु के कारण उन्हें पद पर बने रहने से रोक दिया गया था, लेकिन इसके विपरीत, वह हमेशा के लिए बने रहने के कारण बिना किसी रुकावट के पुजारी पद पर बने हुए हैं। एक पुजारी की आशा जिसका मंत्रालय अंतहीन और निर्बाध होगा, इब्रानियों के लिए अद्वितीय नहीं है। लेवी के नियम के 18वें अध्याय में उसी आशा की एक उल्लेखनीय अभिव्यक्ति दिखाई देती है, जो एक अच्छे और न्यायपूर्ण उच्च पुजारी की आशा करता है, जैसा कि लेखक कहते हैं, जिसका पीढ़ी-दर-पीढ़ी कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा।

उच्च पुजारियों के परिवर्तन ने मध्यस्थता की प्रणाली में अस्थिरता पैदा की जिस पर यहूदी लोग ईश्वर के साथ अपनी वाचा में भरोसा करते थे। सभी उच्च पुजारी ईश्वर और अपने पद के प्रति समान रूप से वफादार नहीं थे। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के मध्य के हेलेनाइजिंग उच्च पुजारियों की यादें, जेसन और मेनेलॉस जैसे लोग और अविश्वसनीय एल्किमस ने लेवी के वसीयतनामे के लेखक द्वारा लिखे जाने तक उच्च पुजारियों के उत्तराधिकार को कुछ तनाव या चिंता का स्रोत बना दिया था।

ईश्वरीय-मानवीय संबंधों के लिए इस पद का महत्व बताता है कि क्यों लेवी के नियम के लेखक ने एक गुणी, स्थिर, अमर महायाजक को एक बहुत ही वांछनीय गुण माना। इब्रानियों के लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि अब ऐसे अमर मध्यस्थ का लाभ है, जैसा कि अभिभाषकों के पास पुत्र में है। इस कारण से, वह उन लोगों को बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से ईश्वर के निकट आ रहे हैं, क्योंकि वह हमेशा उनकी ओर से मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

अभिभाषकों को कभी भी ऐसे भविष्य से डरने की ज़रूरत नहीं है जिसमें लोगों के अपने ईश्वरीय संरक्षक के साथ रिश्ते को बनाए रखने के लिए कोई मध्यस्थ काम पर न हो। उन्हें कभी भी एक वफादार और प्रभावी मध्यस्थ के बदले एक अविश्वसनीय मध्यस्थ के आने से डरने की ज़रूरत नहीं होगी, जैसा कि 175 ईसा पूर्व में ओनियास की जगह उसके भाई जेसन को लाना राष्ट्र के लिए दुख की बात साबित हुई थी। नहीं, बल्कि अभिभाषक अपने वफादार और दयालु उच्च पुजारी पर भरोसा कर सकते हैं कि वे सभी कल के लिए उनकी ओर से ईश्वर के सामने खड़े रहेंगे।

इब्रानियों 7, आयत 26 से 28, अध्याय 5 से शुरू हुई याजकत्व की पिछली चर्चा के मुख्य बिंदुओं को एक साथ लाते हुए, एक पुनरावृत्ति प्रदान करते हैं। क्योंकि ऐसा महायाजक हमारे लिए उचित था, जो पवित्र, निष्कलंक, निष्कलंक, पापियों से अलग और स्वर्ग से ऊपर ऊंचा हो, जिसे लेवीय महायाजकों की तरह प्रतिदिन की आवश्यकता न हो, कि वह पहले अपने पापों के कारण परमेश्वर को और फिर लोगों के लिए बलिदान चढ़ाए। इसके लिए, उसने एक ही बार में अपने आप को बलिदान करके, क्योंकि व्यवस्था ने ऐसे लोगों को महायाजक नियुक्त किया है जो निर्बलता के अधीन हैं।

लेकिन शपथ का वचन, जो व्यवस्था के बाद आया, एक ऐसे बेटे को स्थापित करता है जो हमेशा के लिए सिद्ध हो चुका है। उपदेश में पहले, लेखक ने पापियों के साथ यीशु की एकजुटता को रेखांकित करने के लिए कुछ कष्ट उठाए थे, यीशु के अनुकूल स्वभाव, उनकी सहानुभूति और अपने ग्राहकों के प्रति उनकी सौम्यता पर जोर दिया था। हालाँकि, अब इस खंड में, लेखक यीशु की मध्यस्थता के दूसरे पक्ष, परमेश्वर के साथ उनकी निकटता और परमेश्वर के साथ रिश्ते के रास्ते में आने वाली हर चीज़ से उनके अलगाव पर जोर देता है।

इस प्रकार, वह यीशु को एक योग्य महायाजक के रूप में बताता है जिसे स्वर्ग से ऊपर उठाया गया है। वह यहाँ फिर से भजन 110, पद 1 में यीशु के बारे में दी गई जानकारी का उल्लेख कर रहा है, जो कि परमेश्वर द्वारा अडिग क्षेत्र में परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने का निमंत्रण है। लेखक इस प्रकार यीशु की अपने अनुयायियों के लिए

दुर्गमता पर जोर नहीं दे रहा है, क्योंकि उसने पहले ही यीशु की सुनने और मदद करने की तत्परता स्थापित कर दी है।

इसके बजाय, वह उनकी ओर से परमेश्वर तक यीशु की पूर्ण और परिपूर्ण पहुँच स्थापित कर रहा है। लेखक यीशु और लेवी के पुजारियों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पर भी जोर देता है, अर्थात् उसकी बेदाग पवित्रता और उसकी अटूट आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर के साथ उसका निर्बाध संबंध। एक बार फिर, इस उपदेश में, लेखक इस विषय पर लौटता है कि सांसारिक उच्च पुजारियों को पहले अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाना पड़ता था।

अर्थात्, उन्हें पहले अपने और परमेश्वर के बीच अपने स्वयं के अपराधों के कारण उत्पन्न बाधाओं से निपटना था, उसके बाद ही वे सामान्य रूप से लोगों के पापों के लिए प्रभावी ढंग से मध्यस्थता कर सकते थे। हालाँकि, यीशु, जिनकी अपने ग्राहकों के साथ सहानुभूति परीक्षण किए जाने के साझा अनुभव पर आधारित है, न कि पाप के साझा अनुभव पर, उन्हें ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, वह लोगों की ओर से एक बार और हमेशा के लिए एक भेंट चढ़ाता है, जिससे उनका पिता के साथ पूर्ण मेल-मिलाप हो जाता है।

इस प्रकार लेखक लेवी के महायाजकों द्वारा बार-बार किए जाने वाले बलिदानों और यीशु द्वारा किए गए एक बार के बलिदान के बीच एक अंतर प्रस्तुत करता है। इस अंतर को अध्याय 9 और 10 में विस्तार से विकसित किया जाएगा, जहाँ लेवी के बलिदानों की दोहरावदार प्रकृति इब्रानियों के लेखक को उनकी प्रभावकारिता की कमी को दर्शाती है। इब्रानियों 7.28 तर्क के इस खंड को एक और अच्छी तरह से निर्मित विरोधाभास के साथ समाप्त करता है, जिसमें लेवी के पुजारियों और यीशु के बीच तीन बिंदुओं पर अंतर दर्शाया गया है।

वह फिर से लिखते हैं: लेखक यीशु की मध्यस्थता की श्रेष्ठता पर जोर देता है और इसलिए, इस विरोधाभास के भीतर प्रत्येक बिंदु पर उसके साथ जुड़े रहने का महान लाभ है। सबसे पहले, शपथ का शब्द, फिर से एक संदर्भ, निश्चित रूप से, भजन 110, श्लोक 4, टोरा को प्रतिस्थापित करता है, लेकिन भगवान की ओर से एक अधिक प्रत्यक्ष प्रतिबद्धता भी दिखाता है, एक व्यक्तिगत शपथ जो भगवान ने इस नए पुजारी के संबंध में ली है। यह नया पुजारी एक अचूक नींव पर स्थापित है, पहले पुजारी के विपरीत, जो एक अनुबंध पर बनाया गया था, जिसे लेखक के अनुसार, मानव पक्षों की अविश्वसनीयता से तोड़ा जा सकता था और तोड़ा गया था।

इसके अलावा, इस पुरोहिताई का पदधारी केवल एक साधारण इंसान नहीं होता बल्कि वह व्यक्ति होता है जो उस दिव्य संरक्षक के साथ विशेष रूप से घनिष्ठ संबंध रखता है जिसका अनुग्रह मांगा जाता है। प्राचीन दुनिया में यह व्यापक रूप से जाना जाता था कि मध्यस्थता में सफलता की संभावना उतनी ही अधिक होती है जितनी अधिक वह संरक्षक के साथ संबंध में करीब होता है। इसलिए, घर के बेटे को अपनी ओर से ईश्वर का अनुग्रह मांगने वाला व्यक्ति बनाना व्यावहारिक रूप से सफलता की गारंटी है।

अंत में, और चरमोत्कर्ष पर, पाप के प्रति उनके दायित्व और मृत्यु के प्रति उनके दायित्व के संबंध में इन मनुष्यों की कमजोरी को पुत्र की शाश्वत पूर्णता के साथ तुलना की जाती है। लेखक यहाँ इस

बात के मूल्य को बनाने के लिए बहुत समय और स्थान समर्पित करता है कि इस यीशु में संबोधित लोगों के पास क्या है ताकि वे इसे अस्थायी लाभों के पक्ष में फेंकने के लिए कम लुभाए जाएँ, जिनकी उन्हें कमी है, जब तक कि उन्हें अल्पसंख्यक ईसाई समूह के साथ पहचाना जाता है। यदि लेखक ने अपने दृष्टिकोण को अंतिम उद्धार और न्याय पर पुनः केंद्रित करने में सफलता प्राप्त की है, तो एक ऐसे व्यक्ति की यह चर्चा जो पूरी तरह से उद्धार करने में सक्षम है और उनके और ईश्वर के बीच एक अचूक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है, काफी प्रभावी होगी।

इससे पहले कि हम इब्रानियों के अध्याय 8 से 10 में आगे की यात्रा जारी रखें, यह विचार करना उचित है कि प्रारंभिक यहूदी धर्म में दूसरों की ओर से स्वैच्छिक मृत्यु को प्रायश्चित बलिदान के रूप में सोचने की पृष्ठभूमि क्या थी। एक इंसान की मृत्यु को प्रायश्चित बलिदान के रूप में कार्य करने, ईश्वर और मानव के बीच संबंधों को बहाल करने का विचार तोराह से नहीं निकला है। इसके विपरीत, तोराह ईश्वर के सामने मानव बलि को घणित मानता है।

दूसरों की ओर से जीवन अर्पित करने का विचार, यहाँ तक कि राष्ट्र के प्रति देवताओं की कृपा को बहाल करने के लिए भी बलिदान करने का विचार, ग्रीको-रोमन दुनिया के साहित्य और पौराणिक कथाओं में अच्छी तरह से प्रमाणित है। यह विचार द्वितीय मंदिर काल के दौरान प्रारंभिक यहूदी धर्म के भीतर एक समानांतर विकास से गुजरता है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह अपनी संस्कृति में ग्रीको-रोमन समकक्षों से आंशिक रूप से प्रभावित है। लेकिन यह इस विचार को वास्तव में स्वदेशी यहूदी तर्क के आधार पर विकसित करके आगे बढ़ा।

यह विचार कि एक व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में दूसरों के लिए मर सकता है, दो बहुत ही महत्वपूर्ण परंपराओं पर आधारित है, जिनमें से पहली है लैव्यव्यवस्था अध्याय 17, श्लोक 11। यह श्लोक पापों के आवरण के साथ रक्त और जीवन के आदान-प्रदान के मूलभूत संबंध को स्थापित करता है। शरीर का जीवन रक्त में है।

मैंने तुम्हें यह रक्त तुम्हारे जीवन के लिए वेदी पर प्रायश्चित करने के लिए दिया है। क्योंकि जीवन के रूप में, यह रक्त ही है जो जीवन के लिए प्रायश्चित करता है। हम भजन संहिता और भविष्यवक्ताओं में देखते हैं, और यहूदी धर्म के चल रहे विकास को अंतर-नियम साहित्य में प्रमाणित किया गया है, जो पशु बलि को तर्कसंगत बनाने की प्रवृत्ति के विकास को दर्शाता है, जो यह सोचने लगे हैं कि भगवान मानव प्रशंसा या आज्ञाकारिता के मानवीय कृत्यों या पापों के लिए पश्चाताप को रक्त बलिदान से अधिक पसंद करते हैं।

उदाहरण के लिए, भजन 51, आयत 16 और 17 के बारे में सोचिए। तुम बलिदान से प्रसन्न नहीं होते, नहीं तो मैं इसे ले आता। तुम होमबलि से प्रसन्न नहीं होते।

हे परमेश्वर, मेरा बलिदान एक टूटी हुई आत्मा है, एक टूटा हुआ और पश्चातापी हृदय है, जिसे तू, परमेश्वर, तुच्छ नहीं समझेगा। इस अवधि में बलिदान की भाषा के रूपकात्मक विस्तार की प्रवृत्ति भी अन्य कार्यों के लिए है। उदाहरण के लिए, भजन 141, श्लोक 2 में धर्मपरायणता के कार्यों को पंथ संबंधी कार्यों के रूप में गिना जा सकता है। मेरी प्रार्थना तेरे सामने धूप के समान और मेरे हाथों को ऊपर उठाना शाम की बलि के समान गिना जाए।

दूसरा तनाव जो वास्तव में, प्रारंभिक यहूदी धर्म में शहीद धर्मशास्त्र के विकास में योगदान देता है, वह है व्यवस्थाविवरण का वाचा धर्मशास्त्र, विशेष रूप से अध्याय 27 से 32 तक। ये अध्याय इतिहास के मूल व्यवस्थाविवरणवादी धर्मशास्त्र को प्रस्तुत करते हैं, जिसके अनुसार परमेश्वर की वाचा के प्रति आज्ञाकारिता से परमेश्वर के आशीर्वाद के अनुभव की अपेक्षा की जाती है, जबकि वाचा की अवज्ञा से राष्ट्रीय आपदा की अपेक्षा की जाती है। लेकिन फिर, लोगों की ओर से आज्ञाकारिता की वापसी से शापों का उलटा असर होगा और परमेश्वर का अनुग्रह पुनः प्राप्त होगा।

सोच के ये दो पहलू, यह विचार कि रक्त प्रायश्चित्त करने के लिए दिया जाता है, जीवन के लिए जीवन, और यह विचार कि यह आज्ञाकारिता है जो राष्ट्र के अभिशाप के अनुभव को दूर करती है, हेलेनाइजिंग संकट की अवधि से अपने स्वयं के शहीदों की मृत्यु की प्रारंभिक यहूदी व्याख्याओं में एक साथ लाई गई है, जो लगभग 168 से 166 ईसा पूर्व की है। अपोकलिफा की पुस्तकों में से एक, 2 मैकाबीज़, इस अवधि की घटनाओं की व्याख्या ड्यूटेरोनोमिस्टिक शब्दों में करती है। इस अवधि के दौरान, यरूशलेम शहर और उसके कुलीन वर्ग की भौतिक समृद्धि और अंतर्राष्ट्रीय उन्नति के लिए, यरूशलेम के पुरोहित अभिजात वर्ग ने यरूशलेम को एक ग्रीक शहर में बदलने की कोशिश की।

इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए, यहूदी अभिजात वर्ग के एक बड़े हिस्से ने जेसन का समर्थन किया, जिसका नाम येशुआ था, लेकिन उसने अपने रूढ़िवादी उच्च पुजारी भाई ओनियास के खिलाफ तख्तापलट में ग्रीक चीजों के प्रति अपने प्यार के संकेत के रूप में जेसन नाम अपनाया। जेसन, एक बार सत्ता में आने और सेल्यूसिड राजा, एंटीओकस IV द्वारा अनुमोदित होने के बाद, ग्रीक शैली के संविधान को अपनाने के पक्ष में टोरा को देश के राजनीतिक संविधान और कानून के रूप में अलग कर दिया, जिससे यरूशलेम में ग्रीक सरकार को काम करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण तैयार हो गए। 2 मैकाबीज़ के लेखक इसे उच्चतम स्तर पर राष्ट्रीय धर्मत्याग के कार्य के रूप में व्याख्या करते हैं।

उनका मानना है कि जेसन और उसका समर्थन करने वाले कुलीन वर्ग का कृत्य वाचा का खंडन था और यही उन आपदाओं का प्रत्यक्ष कारण था जो बाद के वर्षों में राष्ट्र पर आई। वास्तव में, एंटीओकस IV के साथ उनकी घनिष्ठ साझेदारी ने यरूशलेम शहर के लिए आपदाओं को जन्म दिया। कई बार, एंटीओकस ने मंदिर के खजाने पर हमला किया और उसके कई नागरिकों को मार डाला।

यह घटना उस समय चरम पर पहुँच गई जब यहूदियों पर धार्मिक अत्याचार किया गया, जो राष्ट्रों की तरह बनने के लिए टोरा को नहीं छोड़ते। यरूशलेम के कई निवासियों को सेल्यूसिड साम्राज्य के सार्वभौमिक कानून के पक्ष में अपने मूल कानून को पीछे छोड़ने की इच्छा के प्रतीक के रूप में सूअर का मांस खाने या मृत्यु तक यातना दिए जाने के बीच चुनाव करना पड़ा। इन धार्मिक लोगों ने भयंकर पीड़ा के बावजूद सूअर का मांस खाने से इनकार कर दिया।

2 मैकाबीज़ के लेखक इन शहादतों को आज्ञाकारिता की भेंट के रूप में देखते हैं जिसे शहीदों ने खुद भगवान को अर्पित किया था और जिसे भगवान ने राष्ट्र की ओर से स्वीकार किया था। लेखक

लिखते हैं कि उनकी आज्ञाकारी मौतों के कारण, भगवान का क्रोध फिर से उनके पक्ष में हो गया था। उसी कहानी को फिर से दोहराते हुए, 4 मैकाबीज़ के लेखक, शायद एक सदी या उससे भी ज्यादा बाद में, इन शहीदों की मौतों और उनके प्रभावों की व्याख्या करने के लिए बलिदान और पंथ संबंधी भाषा का और भी ज्यादा स्पष्ट रूप से उपयोग करते हैं।

उदाहरण के लिए, उनके पास पहला शहीद था, एलीएज़र नाम का एक बुजुर्ग पुजारी, जिसने भगवान से इस तरह प्रार्थना की थी। अपने लोगों पर दया करो और हमारी सज़ा को उनके लिए काफ़ी बना दो। मेरे खून से उनकी शुद्धि करो और उनके बदले में मेरी जान ले लो।

शहादतों और उसके बाद की घटनाओं पर टिप्पणी करते हुए, जिसमें राष्ट्र ने एंटीओकस IV पर बढ़त हासिल करना शुरू कर दिया और अपनी स्वतंत्रता को फिर से स्थापित करना शुरू कर दिया, 4 मैकाबीज़ के लेखक लिखते हैं कि अत्याचारी को दंडित किया गया और मातृभूमि को शुद्ध किया गया। वे, मानो, हमारे राष्ट्र के पापों के लिए फिरौती बन गए हैं। और उन भक्त लोगों के खून और प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में उनकी मृत्यु के माध्यम से, ईश्वरीय प्रावधान ने इज़राइल को संरक्षित किया, जिसके साथ पहले दुर्व्यवहार किया गया था।

इस बिंदु पर तीसरी शास्त्रीय परंपरा को लाना उचित है, अर्थात् यशायाह 52 पद 13 से 53 पद 12 का सेवक गीत, जो एक शानदार अग्रदूत है। अपमान और हाशिए पर जाने का अनुभव, यहाँ तक कि मृत्यु भी, सेवक गीत में मृत्यु के संदर्भ में फिर से प्रस्तुत की गई है ताकि दूसरों को सजा से मुक्त किया जा सके, इस प्रकार एक प्रतिनिधि प्रायश्चित्त। अपने मूल संदर्भ में गीत का अर्थ चाहे जो भी हो, यशायाह 53 निश्चित रूप से खुद को ऐसे पाठों के लिए खोलता है जो एक धर्मी व्यक्ति की मृत्यु को प्रस्तुत करते हैं जो अपमानजनक रूप से पीड़ित होता है क्योंकि वह ईश्वर के साथ विश्वास तोड़ने से इनकार करता है, एक बलिदान के रूप में जो ईश्वर के अनुग्रह को पुनर्स्थापित करता है और दैवीय क्रोध को रोकता है।

पीड़ित सेवक को पीड़ा और अंग-भंग का सामना करना पड़ता है। यह अंश इस मृत्यु की अपरंपरागत भेंट के रूप में प्रभावकारिता की पुष्टि करता है और अंत में पीड़ित सेवक की महानता और जीत का जश्न भी मनाता है। सेवक गीत के इन सभी तत्वों के समक्ष 4 मैकाबीज़ में शहीदों की प्रस्तुति में और, कुछ हद तक, 2 मैकाबीज़ अध्याय 7 में भी हैं। 2 और 4 मैकाबीज़ में, बेशक, यह मानव रक्त ही नहीं है जो प्रायश्चित्त करता है, बल्कि मृत्यु तक आज्ञाकारिता है, जिसे भगवान एक पूर्ण बलिदान के रूप में स्वीकार करते हैं।

व्यवस्थाविवरणवादी धर्मशास्त्र के संदर्भ में, मृत्यु तक यह वफ़ादारी आज्ञाकारिता का प्रदर्शन है जो व्यवस्थाविवरण अध्याय 30, श्लोक 1 से 5 में दिए गए वादे के अनुसार शापों को उलटने को प्रभावित करती है। पापबलि के बारे में लैव्यव्यवस्था की बलिदान शब्दावली पर आधारित, धर्मी व्यक्ति की मृत्यु वह बलिदान बन जाती है जो पापी और ईश्वर के बीच के रिश्ते को पुनर्स्थापित करती है। यह एक प्रतिनिधि आज्ञाकारिता है और दूसरों की ओर से अंत तक बनाए रखी गई आज्ञाकारिता है और इसलिए, मध्यस्थता का कार्य है। ये सभी परंपराएँ एक साथ समृद्ध पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं जिस पर शुरुआती ईसाई आकर्षित हो सकते थे क्योंकि वे ईश्वर और बड़े लोगों के

बीच के रिश्ते के लिए ईश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता के परिणाम के रूप में स्वीकार किए गए यीशु की मृत्यु के महत्व को स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे थे।